Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 2, Petersburg 1858

सन (वासन *Kleid* und वासना = मिथ्याज्ञान) PRAB. 50,12. *ausreissen* und zugleich *zu Grunde richten:* संघातवान्यथा वेणुर्निविडो वेणुभिर्वृतः। न शक्यः स समुच्छेत्तुं दुर्बलो ऽपि तथा नृपः॥ PAÑKAT. III,57 (vgl. HIT. IV,26). *ausrotten, vernichten:* ये समुच्चिच्छिदुर्ज्ञातीन् MBH. 5,2727. 12,3797.

— परि 1) *auf beiden Seiten abschneiden, beschneiden:* अमूलं वा उभयतः परिच्छिन्नं रत्नः ÇAT. BR. 1,1,2,4. 3,1,2,13. तृणम् LÂṬ. 2,1,6. — 2) *abschneiden:* वाससो ऽर्धं परिच्छिद्य MBH. 3,2593. *zerschneiden, verstümmeln:* ते निपेतुः परिच्छिन्ना भूमौ रामस्य सायकैः R. 3,32,26. — 3) *abscheiden, absondern:* शतेन शतेन वत्सान्पाययति पयः। शतेन परिच्छिद्येत्यर्थः SIDDH. K. zu P. 2,3,27. — 4) *nach allen Seiten abgrenzen, genau bestimmen, genau angeben, richtig abschätzen, sich Gewissheit über Etwas* oder *Jmd verschaffen* Z. d. d. m. G. 7,310, N. 1. P. 2,1,28, Sch. यस्य न चानुबन्धि यशः परिच्छेत्तुमियत्तयालम् RAGH. 6,77. RÂǴA-TAR. 4,206. गतिः शक्या परिच्छेत्तुं न क्षुद्रतविधेर्विधेः VID. 199. मध्यस्था भगवती नौ गुणदोषतः परिच्छेत्तुमर्हति MÂLAV. 13,20. परिच्छिन्नप्रभावर्द्धिर्न मया न च विष्णुना KUMÂRAS. 2,58. कथं नाम प्राणिन आत्मानं परं चापरिच्छिद्य शक्तितः परापकारैर्वर्तन्ते PAÑKAT. 161,24. परात्मनोः परिच्छिद्य शक्त्यादीनां बलाबलम् RAGH. 17,59. (तम्) शीर्षच्छेद्यं परिच्छिद्य *nachdem er sich vergewissert hatte, dass dieser verdiene den Kopf zu verlieren,* 15,51. विश्वं वै ब्रह्मतन्मात्रं संस्थितं विष्णुमायया। ईश्वरेण परिच्छिन्नं कालेनाव्यक्तमूर्तिना॥ BHÂG. P. 3,10,12 (BURN.: *apparaît à l'existence avec ses divisions, par la volonté de l'Être suprême*). परिच्छिन्न *begrenzt, beschränkt:* परिच्छिन्नं न सर्वोपादानम् KAP. 1,77. Sch. zu KAP. 1,28.49.50. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 36. — Vgl. परिच्छित्ति u. s. w.

— विपरि *ringsherum abschneiden, beschneiden, zerschneiden:* विपरिच्छिन्नमूलो ऽपि न विषीदेत् MBH. 5,4513.

— प्र 1) *abreissen, abschneiden; zerschneiden, zerhauen, spalten, durchbohren:* तांस्त्वं प्र च्छिन्धि वरुण पुरा दिष्टात्पुरायुषः AV. 10,3,16. 12,5,51. शीर्षाणि ÇAT. BR. 1,6,2,2. 5,5,4,3. पर्णम् 1,7,1,1. ग्रीवाः 2,1,2,16. Haar ÂÇV. GṚHJ. 1,17. PÂR. GṚHJ. 2,1. बर्हिषः प्रच्छेदं हरति KÂTJ. ÇR. 8,2,22. लतावितानगुल्मांश्च शलाकाकुशपर्वतान्। केचित्कुठारैष्टङ्कैश्च दात्रैश्च प्रचिच्छिदुः॥ R. GORR. 2,87,9. प्रचिच्छेद मुष्टिदेशे महद्धनुः MBH. 6,3709. शूलशक्तिपरश्वधान्। भल्लैर्वृत्रः प्रचिच्छेद HARIV. 13580. MBH. 3,11710. पताकां चक्रगोप्तारौ सर्वोपकरणानि च। लघुहस्तः प्रचिच्छेद 7,1628. तिलशः 7863. — 2) *entreissen, entziehen:* तत्र देवाः प्रपच्छत्ति राज्यानि विविधानि च। शुभैः कर्मभिरारब्धाः प्रच्छिन्दन्त्यशुभेषु च॥ MBH. 12,9770. — caus. *abschneiden lassen:* महात्मनः। कौरा प्रच्छेदयामास MBH. 12,686. प्रवृद्धानां वृक्षाणां शाखां प्रच्छेदयेत्तथा 2637.

— संप्र *zerschneiden, zerhauen, spalten:* ततः शस्त्राणि शूलानि निशितानि सहस्रशः। अस्त्रवीर्येण महता दितिजः संप्रचिच्छिदे॥ HARIV. 13613.

— प्रति *abreissen, abschneiden:* तृणमुभयतः प्रतिच्छिद्य (v. l. प्रच्छिद्य) ÇÂÑKH. ÇR. 1,6,6. *mit Zerhauen, Spalten u. s. w. Jmd* (acc.) *antworten:* तांश्च सात्यकिः। नाराचैः प्रतिचिच्छेद MBH. 7,4848.

— वि 1) *zerreissen, zerbrechen, spalten, trennen, unterbrechen:* यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः। एवा कामस्य विच्छिन्नं सं धेहि वीर्यावति॥ AV. 6,139,5. (शूलम्) विचिच्छिदे हरिरिषुभिः सहस्रधा BHÂG. P. 8,11,31. विच्छिद्य तौ शरैर्वीरौ निकुम्भम् HARIV. 8530. वि वा एतस्य यज्ञमच्छिद्यते TS. 1,5,4,3. 7,1,5. 7,1,5,5. ÇAT. BR. 4,5,2,10. 7,1,2,11. प्राणम् 8,1,1,6. 14,4,2,22. KHÂND. UP. 6,7,1. विच्छिद्यमाने ऽपि कुले *zu Grunde richten* BHAṬṬ. 3,52. विच्छिन्न = विभक्त TRIK. 3,3,362. H. an. 3,416. MED. n. 132. *auseinandergerissen, nicht zusammenhängend, getrennt; unterbrochen, gestört:* विच्छिन्नमृदितस्रग्नः R. 5,13,36. यद्धे विच्छिन्नं भवति कृतसंधानमिव तत् ÇÂK. 9. किरणाः VARÂH. BṚH. S. 29,9. रेखाः 67,76. विच्छिन्नबलकर्मभिः RÂǴA-TAR. 1,179. °प्रसरा विद्या 5,32. °धूमप्रसर RAGH. 16,20. कर्मन् BHARTṚ. 1,95. तिमिरप्रवेशविच्छिन्ना (दृष्टिः) MṚKKH. 14,13. महाभाष्य *fehlend, nicht mehr vorhanden* RÂǴA-TAR. 4,487. विच्छिन्नेषु पथिषु *als die Pfade nicht mehr zusammenhingen, dem Auge in ihrer ganzen Ausdehnung nicht mehr sichtbar waren,* AMAR. 74. अविच्छिन्न *ununterbrochen:* अविच्छिन्नान्तरगृहा (पुरी) R. 1,5,9. चमू, गङ्गा RÂǴA-TAR. 4,514. उदकधारा ÂÇV. GṚHJ. 2,8. 4,6. ÇÂÑKH. GṚHJ. 1,9. वाताः HARIV. 9874. मैत्री BHARTṚ. 1,96. अश्रुवेग R. 4,5,17. मनोगति BHÂG. P. 3,29,11. संस्काराः 7,11,13. पात DAÇAK. in BENF. Chr. 179,16. विच्छिद्य adv. *getrennt von* (abl.): कामाद्विच्छिद्य वाचिनिगूढः प्रचरति PRAB. 33,10. *mit Unterbrechungen:* तत्राद्वितीयवस्तुनि विच्छिद्य विच्छिद्यान्तरिन्द्रियवृत्तिप्रवाहो ध्यानम् (BALL.: *on separate occasions* [*instead of being uninterruptedly so*]) VEDÂNTAS. (Allah.) No. 134. — 2) *sich spalten:* रेतो ऽस्य विच्छिन्द्यात् TS. 5,6,8,5. — 3) विच्छिन्न = कुटिल *krumm* H. an. 3,416. — 4) विच्छिन्न = समालब्ध *gesalbt* TRIK. 3,3,262. H. an. MED. n. 132. — Vgl. विच्छित्ति fgg.

— सम् 1) *abschneiden, abhauen; zerschneiden, spalten, durchbohren:* लोमानि AV. 12,5,68. असिनामृत्समच्छिदन् (so kann man vermuthen st. असुना) 6,104,1. भुजम् — संछिन्नम् MBH. 5,2909. संछिद्य बन्धनम् 1,2242. 3,543. BHÂG. P. 1,15,40. VID. 239. मांसानि MBH. 13,2071. संछिन्नाश्च परश्वधैः 6,1790. शरैः — संछिद्यमानानां कवचानाम् 4,2004. वाणौघान्संचिच्छेद 3,707. 5,7199. तच्चक्रम् — संचिच्छिदुरनेकधा 7,1929. (वराहम्) वाणेन संछिन्धि HARIV. 15438. MBH. 1,8311. BHÂG. P. 3,3,17. 4,6,2. 10,18. संछिद्यन्तौ च गात्राणि *sich gegenseitig Glieder abhauend* MBH. 7,7918. — 2) संशयम् *einen Zweifel zerschneiden, entfernen* BHAG. 4,11. BHÂG. P. 1,15,31. 3,7,15. प्रश्नम् *eine Frage erledigen* 4,29,52.

2. छिद् (= 1. छिद्) 1) adj. am Ende eines comp. P. 3,2,61. *a) abschneidend, zerschneidend, zerbrechend, zerreissend, spaltend, durchbohrend:* (शराः) तनुच्छिदः MBH. 7,4656. वाचश्च हृदयच्छिदः R. 5,37,10. मर्मच्छिदो वेदनाः ÇÂNTIÇ. 1,16. Vgl. उख°, केश°, पत्त°, वन°. — *b) zu Grunde richtend, vernichtend, entfernend:* जीवित° MBH. 5,1809. HARIV. 4774. मरुतो वात्यन्तखेदच्छिदः BHARTṚ. 1,46. सद्वृजिन° BHÂG. P. 2,4,13. भव° 6,35. दुःख° 4,8,23. मार्गेणाधस्तामच्छिदा VID. 33. Vgl. दर्प°, पङ्क°. — 3) m. *Divisor; Nenner eines Bruchs* COLEBR. Alg. 35.

छिदक (von 1. छिद्) n. = वज्र Indra's *Donnerkeil* oder *Diamant* (vgl. RÂǴA-TAR. 4,51) UṆÂDIK. im ÇKDR.

छिदा f. nom. act. von 1. छिद् gaṇa भिदादि zu P. 3,3,104. VOP. 26,192.

छिदि (von 1. छिद्) 1) parox. UṆ. 4,120. adj. *der da abreisst, spaltet u. s. w.* = क्षेत्र UṆ., Sch. — 2) oxyt. UṆ. 4,144. *Axt* UṆ., Sch.

छिदिर् (wie eben) m. UṆ. 1,51. 1) *Axt.* — 2) *Schwert* UṆ., Sch. H. an. 3,555. MED. r. 156. — 3) *Feuer.* — 4) *Strick (der leicht reisst)* H. an. MED.

Institute of Indology & Tamil Studies, Cologne University, Germany 9.2.2007